Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अदि पर्व – 'तापस्य वेस'

डॉ. मनिषा सिंह मरकाम*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – सत्यवती हमारे पवित्र ग्रथ महाभारत की प्रमुख पात्र है। जो हस्तिनापुर के सम्राट शांतनु की पत्नी थी। सत्यवती उनका वह नाम बहुत बाद में रखा गया। उनका नाम मत्स्य गंधा था क्योकि वह मछली के गर्भ से उत्पन्न हुई था। वह अतीव सुन्दरी थी किन्तु उनके शरीर से मछली की गंध आती थी उनके पिता मछली पकड़ने वाले (धीवर) थे इसलिए वह अपने पिता के कार्यो में मद्दत करने के कारण उनका भी रोजमर्रा का कार्य नाव चलाना था एवम् वह नि–प्रति यात्रियों को नदी पार करवाती थी। नियति का अपना अलग ही विधान होता है। यहाँ एक प्रश्न यह भी उपस्थित होता है कि सत्यवती अत्यन्त तेजस्वी स्त्री थी फिर पराशर ऋषि के पहले कोई अन्य पुरूष उन पर आसक्त क्यों नही हो पाया इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि सामान्य पुरूष उनके शरीर में बसी मछली की गंध को सहन नही कर पाता हो। दूसरा कारण यह भी हो सकता है? कि एक तेजस्वी स्त्री को एक तेजस्वी पुरूष ही पा सकता है। नियति ने तो तय कर रखा था कि ऋषि पाराशर के संग के बाद ही मत्स्यगंधा सत्यवती बन पाएँगी। ऋषि पाराशर की तेजस्विता, ओजस्विता शरीर सौष्ठव एक सामान्य पुरूष नही पा सकता। दोनों ही सौंदर्य और ज्ञान के प्रकांण्ड विद्धान थे। दोनो ही, एक दूसरे के लिए योग्य थे। इसलिए दोनों की सहभागिता से ही मिलन संभव हो पाया और एक नया इतिहास महर्षि वेद व्यास का जम्म हुआ।

जैसा कि पहले बताया गया कि सत्यवती का मूल नाम 'मत्स्यगंधा' था। यह नाम उनके शरीर से मछली की गंध आने के कारण था यह मछली की गंध उनके शरीर में रची बसी थी यह गंध सामान्य तौर पर समप्त होने वाली नही थी। एक तेजस्वी ऋषि ही इस गंध को उनके शरीर से दूर कर सकता था। शायद विधि द्धारा ऋषि पाराशर ही तय किये गये थे। ये सारा मिलन योगशक्ति के बल पर ही तय हो रहा था। ऋषि पाराशर ने अपनी योगशक्ति के बल पर एक ऐसी धुंध का निर्माण किया जिससे चारों ओर गहन धुंध छा गई। दोनों की सहमति से प्रेमालिंगन हुआ। ऐसा अद्भुत चमत्कार देखकर मत्स्यगंधा अत्यन्त विस्मित हो गई। वह लजा गई और बोली ऋषिवर मै कुँवारी कन्या हूँ और अपने पिता के संरक्षण में हूँ। यदि मेरा कौमार्य भंग हो जाता है तो मै किस प्रकार अपने पिता को अपना मुख दिखाऊँगी। इस सब बातों पर विचार करके आपकों जो उचित लगे वह करें। ऋषि को भी परम दायित्व का पालन करना था। एक जवाबदार व्यक्ति के उत्तरदायित्व भी महत्वपूर्ण होते है। उत्तरदायित्वों का निर्वहन एक महात्वपूर्ण इतिहास रचता है और भारत का इतिहास सदैव ही अद्भूत रहा है। चूँकि ऋषि परम प्रतापी और प्रकांण्ड विद्धान थे इसलिए उन्होने कहा कि तुम मुझसे कोई बरदान माँग सकती हो। मत्स्यगंधा बोली आज से मेरे शरीर से मछली की गंध के स्थान पर सुमंधुर गंध आये। यही मांगती हूँ।

ऋषिपाराशर ने उनकी यह इच्छा पूरी कर दी और मत्स्यगंधा ने ऋषि का आलिंगन स्वीकार किया तब से मत्स्यगंधा के, शरीर से ऐसी सुगन्ध आनेलगी, जिसका अनुभव आठ मील तक कीया जा सकती है। जब से मत्स्यगंधा, योजनगंधा के नाम से जानी जाने लगी। दिव्य समय में दिव्य आंत्माओं के मिलन से एक दिव्य पुत्र का जन्म हुआ तपस्या जिसके पिता की सहज प्रवृत्ति थी। ऋषि पराषर तट पर आये और वहाँ से चले गए यह ईष्वरीय लीला थी शायद इसलिए कि मत्स्यगंधा को योजनगंधा और योजनगंधा से सत्यवती तक का सफर तय करना था। योजनगंधा का पुत्र अतिशीध्र बडा हुआ और अपनी माता से प्रस्थान की अनुमति लेते हुए उसन कहा– माता आप जब भी मेरा स्मरण करेंगी। मैं तुरन्त आपके समक्ष उपस्थित रहूँगा । दिव्य माता–पिता का पुत्र भी दिव्यता को प्राप्त वेदव्यास हुए। बेदों की रचना करने के कारण ही उनका नाम 'व्यास' पड़ा।

आचरण की तेजस्विता व्यक्ति को महान बनाती है हमारे कर्म ही हमारी अनुपस्थिति में उपस्थिति का भास करातें है। मत्स्य व्यास का जन्म एक दुसरे के प्रति आसक्ति का कारण नही है भारतीय जनमानस को एक नया संकल्प देने की प्रेरणा शक्ति है। दोनों की प्राणवायु के सिचन का परिणाम व्यास है जिनके द्धारा आनेकों महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की जानी थीं। इतने महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए किन्ही महत्वपूर्ण व्यक्तियों को ही उनके माता–पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त होना था। यह अचानक हुई घटना का परिणाम नही था। सबकुछ विधि के विधान द्धारा नियत किया जा चुका था सिर्फ कार्यरूप मे परिणति ही तापस वेश में होनी थी।

बुद्धिमत्ता और सिद्धता का आशीर्वाद जिसे स्वयं सरस्वती ने दिया हो। जो स्वयं रूपवान हो आसक्ति के विजेता हो उसमें अचानक अपना प्रेम उसे ईश्वर के निकट ही खडा करता है। क्योकि ईश्वर के द्धारा उसमें यह कार्य करवाया जाना है। उनकी आसक्ति के भाव में भी ईश्वर से प्रेम और कलेश के भाव ही उत्पन्न है इसलिए हम यह नही कह सकते कि महर्षि पाराशर का सत्यवती के प्रति आकृष्ट होना सन्यासी तत्व का पालन नही था। जिनका जीवन अपनी संकल्प शक्ति, कर्मणाशक्ति और देश के प्रति प्रेम,देश के गौरव मान, विश्वास और श्रद्धा से भरा हो। जिस सन्यासी का जीवन त्याग के अलावा अन्य किसी प्रकार की शिक्षा ना देता हो उसके प्रति यदि हमारे

मन में यह भाव आए कि यह सब आसक्ति का परिणाम है तो हमें स्वयं को सरस्वती के समक्ष रखने की आवश्यकता है। समीक्षा के बजाय कुछ सीखने की आवश्यकता है। हमारे अन्दर उद्धेलित हो रही वासना के वजाय उसे उपासना में परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

सत्यवती और महर्षि पाराशर के मिलन से उत्पन्न संतान समाज को एक अनुशासित और परमात्मा के सृष्टि निर्माण के सार्थक संकल्प को पूरा करने में सहभागी होगी। वह सृष्टि को एक सकारात्मक भाव से भरने में सहायक होगी। महर्षि व्यास का श्री आलोक पूरे विश्व में दमकने के लिए था। उनपर इस धरा के कई कर्त्तव्य, दायित्व आने वाले थे जिसका निर्वहन उन्हे देषहित, समाजहित के लिए अत्यन्त विवेकपूर्ण तरीके से करना था। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि जहाँ मोहपरमात्मा को भी सामान्य व्यक्ति बना देता है। वही प्रेम साधारण मनुष्य को भी ईश्वरीय शक्तियों से युक्त बनाता है। प्रेम जब बंधनयुक्त होता है तो वह मोह कहलाने लगता है। सत्यवती और महर्षि पाराशर बंधनमुक्त थे किसी विशेष के निर्माण के लिए ही प्रकृति ने उनका चयन किया था। कार्य की परिणति के पश्चात स्वेच्छा से दोनो ने अपने-अपने मूल जीवन को भलीभाँति स्वीकार किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. महाभारत एक प्रमाणिक संस्करण - पूर्ण प्रज्ञय दास द्वारा पुर्नलिखित।

****